शुरुआती कक्षाओं में कहानी शिक्षण

संध्या पाण्डेय

शुरुआती कक्षाओं में बच्चों की भाषाई क्षमताओं के विकास में कहानियों और कहानी शिक्षण का ख़ास महत्त्व है। इस लेख में लेखिका ने बताया है कि बच्चों के साथ कहानियों पर काम करना क्यों ज़रूरी है और ये बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने में किस तरह की भूमिका निभाती हैं। लेखिका ने *रिमझिम* पाठ्यपुस्तक में दिए गए पाठ्यचर्या के उद्देश्य व सीखने के प्रतिफल को ध्यान में रखते हुए कहानियों के साथ की गई बहुत सारी गतिविधियों और प्रक्रियाओं का वर्णन किया है। लेख में इस बात का भी ज़िक्र है कि कहानियों का चयन कैसे किया जाए और इनमें मातृभाषा के लिए कैसे जगह बनाई जाए। सं.

प्राथमिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है या यूँ कहें कि केन्द्रीय स्थान रखता है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। हमारे यहाँ विद्यालयों में प्रथम भाषा हिन्दी है। यदि हिन्दी भाषा पर विद्यार्थियों की समझ अच्छी होगी तो दूसरे विषयों को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया भी आसान हो पाएगी। सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना– भाषा के महत्त्वपूर्ण कौशल हैं। हम जिस भाषा को सीखना या सिखाना चाहते हैं, उसी भाषा में जितना ज़्यादा बच्चे को सुनने या पढ़ने को मिलेगा उतना ही आसान व सहज उस भाषा में उसका बोलना और लिखना होगा। जितना अधिक और विविध तरह का इनपुट होगा उतना ही बेहतर आउटपुट होगा। पाठ्यपुस्तक में दिए गए अनेक तरह के अवसर, बाल साहित्य का ख़ूब इस्तेमाल, संवाद के मौक़े, आदि इनपुट के सन्दर्भ में हम उपयोग करते ही हैं।

बच्चे अपने परिवेश से कहने और सुनने का हुनर और दुनिया को देखने-समझने का नज़रिया लेकर स्कूल में दाख़िल होते हैं। यह हुनर और नज़रिया आसपास की बातचीत, बाज़ार, विज्ञापन, मेले, नानी के घर, खेल गीत, लोकगीत, लोककथा, घटनाओं, आदि से निरन्तर गुज़रते व बारीक़ अवलोकन करते हुए बनता है। शुरुआती कक्षाओं में यदि विभिन्न सन्दर्भों में अर्जित बच्चों के ऐसे अनुभवों और नज़रिए को तरजीह दी जाती है तो निश्चित ही पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया सहज, आसान और सार्थक होती है। यह केवल हिन्दी भाषा की बात नहीं, बल्कि गणित और अँग्रेज़ी पर भी लागू होती है, ऐसा मैंने शिक्षण करते हुए महसूस किया है। यहाँ मैं शुरुआती कक्षाओं (एक और दो) में कहानी की अनिवार्यता, भूमिका और प्रक्रियाओं का ज़िक्र करना चाहूँगी।

भाषा शिक्षण में बच्चों को पढ़ना-लिखना सीखने-सिखाने के अनेक माध्यम हैं, इनमें से एक सशक्त माध्यम कहानी है। छोटे बच्चों को वे कहानियाँ अधिक प्रिय हो सकती हैं, जो उनकी अपनी दुनिया के क़रीब हों। अपनी दुनिया से आशय यहाँ कल्पना, जिज्ञासा, कौतूहल, संघर्ष, साहस, जीत, बहादुरी, चमत्कार, सौन्दर्य, ख़ुशी, दुख आदि मनोभावों से है। जैसा कि अकसर कहा जाता है, कहानियाँ भाषा संवर्धन

के साथ-साथ तर्कशक्ति और कल्पनाशीलता को भी बढ़ावा देती हैं। कहानियों के प्रति बच्चे तो क्या बड़े भी सहज ही आकर्षित हो जाते हैं। कहानियाँ आनन्द और मनोरंजन के साथ-साथ जीवन को समझने, पात्रों के बारे में चर्चा के माध्यम से विभिन्न परिस्थितियों को समझने और उनके अनुसार व्यवहार करने की समझ विकसित करने में सहायक होती हैं। कहानी को प्रस्तुत करने के विभिन्न रूप हो सकते हैं। जैसे– कविता, संस्मरण, यात्रा वृत्तान्त, ऑडियो-वीडियो या छोटी-छोटी बाल फ़िल्में। पर इससे पहले है कहानी के चयन की बात। एक शिक्षक के तौर पर कहानी के चयन को लेकर सतर्क होने की ज़रूरत है। साथ ही सुनाई जाने योग्य कहानियों की पूर्व तैयारी होनी ज़रूरी है। इस लेख में आगे कहानियों की ज़रूरत और उनपर कक्षा में किए जाने वाले काम के बारे में मैंने अपने विचार रखे हैं।

कहानी की आवश्यकता

पाठ्यपुस्तक *रिमझिम* में पहली और दूसरी कक्षा में भरपूर कहानियाँ दी हुई हैं। इसके साथ ही पाठ्यचर्या के उद्देश्य और सीखने के प्रतिफल को देखें तो अधिकतर बिन्दु हमें कहानी शिक्षण से जुड़ते दिखाई देते हैं। कहानी धैर्यपूर्वक सुनने और अभिव्यक्ति कौशल का विकास करती है। कल्पना, तर्क, अनुमान, सौन्दर्य बोध (सराहना करना, संवेदनशीलता को महसूस करना), दुनिया को समझने, शब्द भण्डार बढ़ाने, अन्दाज़ा लगाने, भाषा के इस्तेमाल, क्रमबद्धता, विराम चिह्नों की समझ, स्कूल में भय व झिझक दूर करने जैसे अनेक कौशलों को बेहतर बनाने में कहानी की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

कहानी शिक्षण की प्रक्रियाएँ

यहाँ प्रक्रिया के तौर पर कुछ बातें मैं अपने अनुभव के आधार पर और कुछ आरम्भिक भाषा कार्यक्रम के सत्रों से मिली गतिविधियों के आधार पर साझा करना चाहूँगी। कहानी का चयन इस बात पर निर्भर करता है कि वह केवल सुनाने के लिए है या वह बच्चों को खोजने, सोचने, पढ़ने, लिखने, अभिव्यक्त करने और रचनात्मकता का अवसर देती है। शुरुआती कक्षाओं में पढ़ने-लिखने को रोचक बनाने के लिए सुनाने से लेकर अक्षर मात्रा की पहचान तक की यात्रा विभिन्न चरणों में होती है। इसे हम समग्रता में शिक्षण करना कह सकते हैं। कुछ चरणबद्ध तरीक़े इस तरह से हो सकते हैं :

1. शुरुआती कक्षाओं के लिए मन को गुदगुदाने वाली कहानी का चयन करना : जैसे– छोटा सा मोटा सा लोटा, लालू और पीलू, चूहे को मिली पेंसिल, एक कहानी कहनी है, आदि।

2. उचित हाव-भाव, आरोह-अवरोह, मुखौटे का उपयोग कर नाटकीय ढंग से कहानी सुनाना : यदि सम्भव हो तो पद्य रूप में कहानी को ढालकर सुनाना, मसलन जब मैं पहली और दूसरी कक्षा में कहानी की शुरुआत करती हूँ तो 'प्यासा कौआ' कहानी को पद्य रूप में उचित हाव-भाव और लय के साथ चित्र की सहायता से सुनाती हूँ :

तेज़ धूप में कौआ प्यासा
पानी की थी कहीं न आशा
एक घड़े में थोड़ा पानी
देख हुई उसको हैरानी...
या
एक कहानी कहनी है
वो जो आम की टहनी है
वहीं कहीं एक तोती है
जो दिनभर बस रोती है
कोई उसे जगा दे तो
बड़ी देर तक रोती है
सभी परिन्दे कहते हैं
वो कुम्भकरण की पोती है

कहानी सुनाते समय यह प्रयास रहे कि बच्चे भी साथ में हाव-भाव के साथ अभिनय

करें और हम भी बच्चों के साथ आई कान्टेक्ट बनाकर रखें। जैसा कि हम सभी जानते हैं, बच्चे शान्त नहीं बैठ सकते, उनमें अपार ऊर्जा होती है। उनकी ऊर्जा का उपयोग हम अपनी कक्षा को जीवन्तता देने और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को रुचिपूर्ण बनाने के लिए करें। एक चीज़ का और ध्यान रखना चाहिए कि कहानी का प्रयोग करते समय हमारी प्राथमिकता बच्चों का मनोरंजन और आनन्द प्राप्ति रहे। भाषा तो वे इस प्रक्रिया में ग्रहण ही कर रहे होंगे।

3. कहानी सुनाने के बाद उसपर बातचीत करना, जिसमें सोचने, अनुभव को शामिल करने व अनुमान लगाने के मौक़े हों : जैसे– कौन-सा पात्र अच्छा या बुरा था, ऐसा कहने के पीछे की समझ, आप किसी पात्र की जगह होते तो क्या करते, फिर आगे क्या हुआ होगा, क्या आपने ऐसा देखा है, कहानी से जुड़ी कोई समस्या उठाकर उससे उबरने के तरीक़ों को सुनना, आदि।

4. कहानी को आगे बढ़ाना : मौखिक रूप से कहानी में बच्चों को जुड़ने के लिए प्रेरित करना। फिर क्या हुआ होगा, आगे ऐसे हुआ होता तो, जैसे वाक्यों का उपयोग करके उनके अनुमान, कौतूहल, सोचने के कौशलों को विस्तार देने का प्रयास करना। बातचीत में बच्चों से आए विचारों को बोर्ड पर हूबहू बोलते हुए लिखना और बाद में उंगली रखकर पढ़ना।

5. कहानी को चार्ट या बोर्ड पर बड़े-बड़े फॉण्ट में लिखकर, उंगली रखकर पढ़ना-सुनाना : इस प्रक्रिया में बच्चे ध्वनियों, शब्दों, वर्णों, मात्राओं, उच्चारण, वाक्यों, विराम चिह्नों, आदि से परिचित होते हैं। यदि सम्भव हो तो कहानी से जुड़ा चित्र भी उसमें शामिल करना चाहिए ताकि बच्चों को आकर्षक लगे। यह चार्ट हमें कक्षा में प्रिंट रिच के रूप में उपयोगी होता है। यह बच्चों की आँखों के सामने रहता है तो बच्चे उससे अपना जुड़ाव बनाए रखते हैं।

6. चित्रकथा के रूप में इस्तेमाल : आगे क्या हुआ, इससे घटनाओं के क्रम को समझने में मदद मिलती है। छोटे बच्चे चित्रों के प्रति अधिक आकर्षित होते हैं। रंगीन चित्रों के माध्यम से कहानी को कहा जा सकता है और उन चित्रों पर बच्चे क्या सोच रहे हैं, उन्हें क्या लगता है, सबकी प्रतिक्रिया लेते हुए कहानी को आगे बढ़ाते हैं।

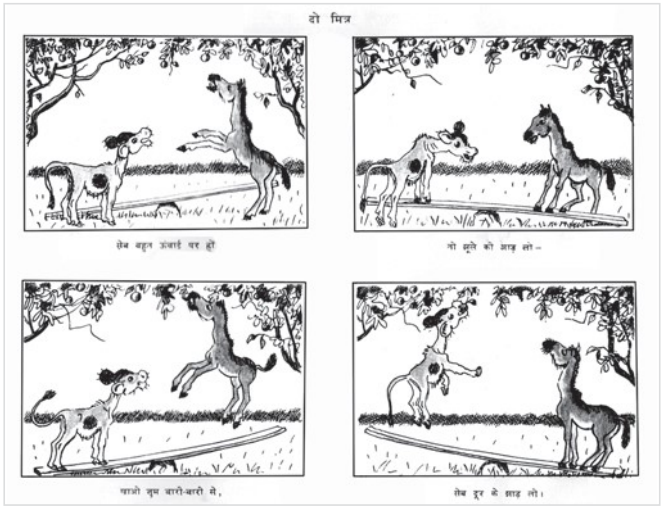

चित्र 1

उक्त चित्र पर हम बच्चों के साथ चर्चा करते हुए कहानी को बढ़ाएँगे। मसलन, यह फल कैसे हैं। सम्भावित उत्तर गोल है। तो गोल आकार के कौन-कौन से फल होते हैं। सम्भावित उत्तर माल्टा, सेब, कीनू, अनार, आदि। अच्छा, तो मान लेते हैं कि यह सेब के फल हैं। अब सेब देखकर वह उसे खाना चाहते हैं लेकिन वहाँ तक पहुँच नहीं पाते। क्या करें कि वे सेब तक पहुँच जाएँ। और बातचीत करेंगे कि यह क्या लग रहा है, सम्भावित उत्तर लकड़ी का पट्टा, लकड़ी, आदि। उसके नीचे क्या है, बड़ा-सा पत्थर या बड़े पेड़ की जड़, आदि। कभी ऐसा झूला देखा है या झूला है, इसमें क्या होता है। इसमें एक तरफ़ अगर कोई ज़ोर लगाकर बैठे

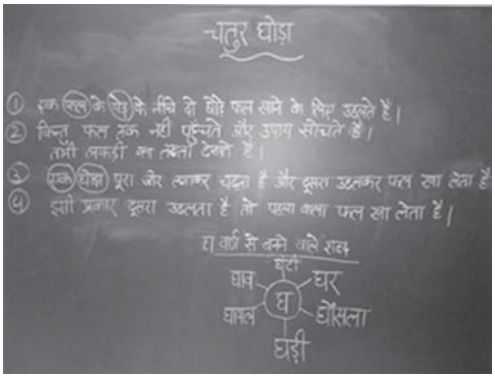

चित्र 2

चित्र 3

चित्र 4

तो दूसरी तरफ़ उठ जाता है और इस प्रकार दोनों एक दूसरे को उछालते हैं और फल खा लेते हैं।

अब कहानी की इन पंक्तियों को बोर्ड या चार्ट पर बोल-बोल कर लिखेंगे और प्वाइंटर की मदद से ज़ोर से पढ़ेंगे। फिर बच्चों से कुछ शब्दों जैसे फल, पेड़, घोड़ा, एक आदि को उन वाक्यों में ढूँढ़ने को कहेंगे और उनपर गोला लगाएँगे। तत्पश्चात एक वर्ण जैसे 'घ' से बनने वाले शब्दों को बच्चों के साथ मिलकर बनाएँगे और बोर्ड पर लिखेंगे। फिर बच्चों को वे शब्द अपनी कॉपी में भी लिखने के लिए कहेंगे और अन्त में उन्हें अपने प्रिय फल का चित्र बनाने के लिए भी कहेंगे।

इसी प्रकार बाल साहित्य या पाठ्यपुस्तकों में चित्र-आधारित कहानियों को बच्चों के बीच में बैठकर किताब को उनकी तरफ़ करके और लिखे हुए वाक्यों पर उंगली रखते हुए पढ़कर और चर्चा करते हुए हम कहानी की गतिविधि करते हैं। इस तरह बच्चों को घर के माहौल से विद्यालय के माहौल में जोड़ने के लिए कहानियाँ सेतु का काम करती हैं।

7. रोल प्ले द्वारा : सुनाई गई कहानी में बच्चों को शामिल करते हुए रोल प्ले तैयार करना, सारे बच्चों को मौक़े देना, मुखौटे का उपयोग करते हुए अभिनय करने व बोलने के अवसर देना, उनसे बात करके जानना-समझना कि कैसा लगा। इससे रचनात्मकता और अभिव्यक्ति कौशल को बढ़ावा मिलता है।

8. कहानी के वाक्यों, शब्दों की पट्टियाँ बनाना और उन्हें क्रम से देखकर लगाने को कहना : इससे वाक्य विन्यास, शब्द भण्डार, शब्द के उपयोग की पहचान तो होती ही है, साथ ही यह समझ भी बनती है कि बोले हुए को लिखा और पढ़ा जा सकता है। वाक्यों की पट्टियाँ ज़्यादा हो सकती हैं, वहीं शब्द पट्टियाँ कुछ चयनित वाक्यों के शब्द लेकर बनाई जा सकती हैं। यह भी कि ऐसी कविताएँ जिनमें शब्दों का बहुत अधिक दोहराव है, उनको लेकर शब्द पट्टी बनाना ज़्यादा सार्थक हो सकता है।

9. कहानी से जुड़े पात्रों के चित्रों को उकेरना, उनमें अपनी पसन्द के रंग भरना और काग़ज़ या मिट्टी का उपयोग करते हुए कलाकृतियाँ बनाना : रचनात्मक कौशल को निखारने के लिए और उनकी उंगलियों की

माँसपेशियों को लचीला बनाने में इस तरह के अवसर उपयोगी होते हैं। बच्चे चाहें तो कहानी में आए सभी पात्रों के चित्र बनाएँ, या जो पात्र उन्हें सबसे अच्छा लगा उसका चित्र। कहानियों में घटी घटनाओं के सिलसिलेवार चित्र भी बना सकते हैं।

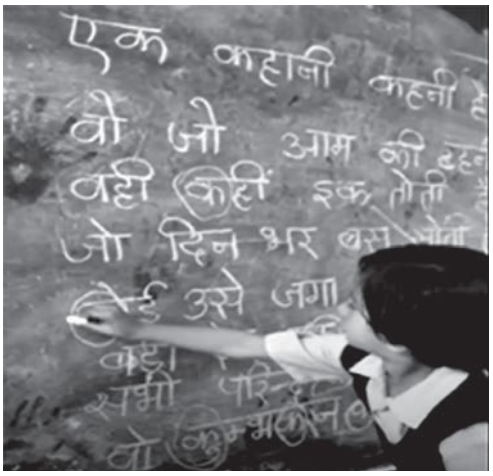

चित्र 5

कार्य पत्रक

बातचीत (मौखिक)

1. आपके घर और आसपास कौन कौन से पशु हैं? और वो क्या क्या खाते हैं?

(2) बच्चो यदि आपको कोई फल तोड़ना हो तो आप कैसे तोड़ते हैं।

(3) मिलान करें (लिखित)

(a) अंगूर

(b) आम

(c) सेब

(d) केला

(4) निम्न पक्षियों के नाम को पूरा कीजिए–

को__ल, तो__, कौ__, गौरै__, कबू__र

(5) गर्मियों में आप निम्न चीजों में से क्या खाना पसंद करते हैं उस पर (✓) का निशान लगाइये।

(a) चाय ( ) (b) शरबत ( )

(c) आइसक्रीम ( ) (d) गरम दूध ( )

(6) निम्न चित्र को पूरा कीजिए और रंग भरिये तथा नाम लिखिए–

आम

चित्र 6

10. अक्षर–मात्रा की पहचान : बोर्ड पर लिखी कहानी को ख़ुद पढ़ना, बच्चों के साथ पढ़ना, बच्चों से पढ़वाने के बाद शब्दों, अक्षरों और मात्राओं पर गोला लगाने को कहना। लिखने के अभ्यास के तौर पर आसान दिखने वाले शब्दों, अक्षरों को देखकर बनाने को कहना। ऐसे कार्य जोड़े में कराए जा सकते हैं।

11. आकलन : कहानी की पूरी प्रक्रिया में निरन्तर आकलन का उपयोग सीखने के लिए होता ही रहता है। शुरुआती कक्षाओं में मौखिक कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना) के विकास पर अधिक ज़ोर रहता है, वहीं लेखन के कौशलों (लिखना, रचनात्मक कार्य) की शुरुआत होती रहती है। कहानी को मौखिक रूप से अपने शब्दों में सुनाने को कह सकते हैं। मौखिक कौशल के अन्तर्गत क्या और कहाँ वाले प्रश्न अधिक होते हैं। इनके जवाब के क्रम में बच्चों के उत्तर एक शब्द या वाक्य में हो सकते हैं। इससे स्मरण शक्ति, क्रमबद्धता, ध्यानपूर्वक सुनने, समझकर बोलने का आकलन आसानी से हो जाता है। इसके साथ ही लेखन की क्षमता समझने के लिए वर्कशीट का इस्तेमाल किया जा सकता है। यह भी ध्यान देने वाली बात है कि शुरुआती कक्षाओं में पाँच या छः प्रश्न से अधिक नहीं होने चाहिए। अधिक प्रश्न होने पर बच्चों में रोचकता और उत्साह की कमी होने लगती है। उदाहरण के लिए, दूसरी कक्षा की वर्कशीट कुछ इस तरह से हो सकती है। देखें चित्र 6।

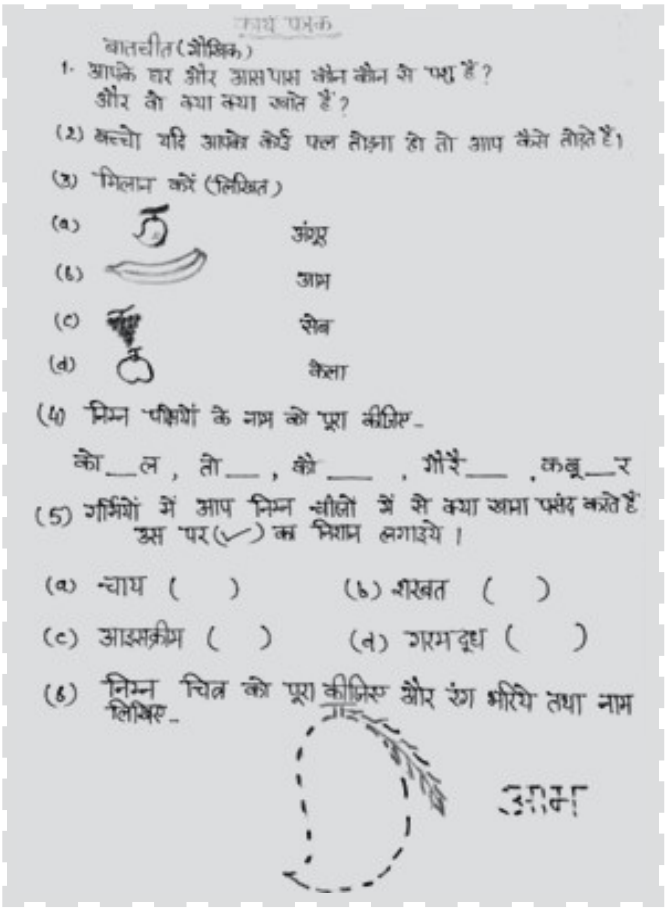

निष्कर्ष

सीखने की शुरुआत करने वाले बच्चों के लिए कहानियों का चयन करते समय यह ध्यान देने वाली बात होती है कि कहानी छोटी हो। उसका विषय बच्चों के दैनिक जीवन या उनके अनुभवों से जुड़ा हो। नए शब्दों व परिवेश से भी गुज़रने का अवसर हो। सुनने-सुनाने को विस्तार देते हुए हम बच्चों से भी अपने दादा-दादी, पापा-मम्मी या बड़े भाई-बहनों से कहानी सुनने और उसे पुनः कक्षा में सुनाने को प्रेरित व प्रोत्साहित कर सकते हैं। मैंने महसूस किया है कि बच्चे इस प्रकार के क्रियाकलाप में बहुत उत्साह से प्रतिभाग करते हैं। जब वे अपनी पसन्द की कहानी सुनाएँ तो उनको उच्चारण आदि पर टोकने की बजाय उनकी प्रशंसा की जाए। इन गतिविधियों में वे अपनी मातृभाषा (गढ़वाली आदि) का प्रयोग भी करेंगे, इसे हमें सहजता से लेना चाहिए। भाषा के रूप में कहानियों की पहुँच समग्र रूप में होती है। विद्यालय के पुस्तकालय में रंगीन, आकर्षक, बड़े-बड़े चित्रों वाली किताबें होती हैं, जिनमें प्रत्येक पेज पर बड़े से चित्र के नीचे एक लाइन लिखी होती है। इस प्रकार की पुस्तकें बच्चे को कहानी के परिप्रेक्ष्य में पढ़ने की आदत, अनुमान लगाने, कल्पना करने और कौतूहल जगाने का कार्य करती हैं और छोटे-छोटे वाक्यों की बनावट को समझने के लिए प्रेरित करती हैं। बच्चों के मन में कहानी के माध्यम से ललक व जिज्ञासा जगाने के उपरान्त उनको पढ़ने के लिए तैयार करना सहज होता है। कहानी शिक्षण की पूर्व तैयारी भाषा शिक्षण के उद्देश्यों और आधारभूत कौशलों को विकसित करने में निश्चित ही मददगार होती है।

संध्या पाण्डेय ने स्नातक और बीटीसी किया है। वर्तमान में राजकीय प्राथमिक विद्यालय अलमस, जौनपुर, टिहरी गढ़वाल में प्रधानाध्यापिका के पद पर हैं। वे विगत तेईस वर्षों से सरकारी सेवा में अध्यापन कार्य कर रही हैं। उसके पहले तीन वर्षों तक कान्वेंट स्कूल में शिक्षण कार्य करने का अनुभव भी रखती हैं। आप बच्चों के साथ शिक्षण करने के साथ-साथ रोचक गतिविधियों के माध्यम से शिक्षण में नवाचार करने में रुचि रखती हैं।

सम्पर्क : pandeysandhya1969@gmail.com